डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक कार्यों की उपादेयता

लेखक

मनोज भाकुनी
प्रवक्ता, डायट लोहाघाट (जनपद–चंपावत)
Email: mnbhakuni23@gmail.com

सारांश(Abstract):– डॉ राजेन्द्र प्रसाद का सम्पूर्ण जीवन सादा जीवन और उच्च विचार पर आधारित था। डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि ज्ञान सबसे कीमती चीज है जिससे मनुष्य सफलता का परचम पूरी दुनिया में फैलाता है। ज्ञानी मनुष्य हर जगह सफलता पाता है। डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी महात्मा गांधी जी के चहेते थे तथा महात्मा गांधी जी की विचारधारा डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुकूल थी। एक बार परीक्षा देते हुए परीक्षक ने डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी की उत्तर पुस्तिका देखते हुए कहा कि – **"The examinee is better than examiner."**
डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मानव जीवन के मूल्यों का विकास, अंधेरे रूपी जीवन में दीपक रूपी प्रकाश विराजमान करना है। शिक्षा फूल सी सुगंध है जो कि दुनिया में फैलती है। भारत के एक मात्र राष्ट्रपति थे जिन्होंने दो कार्यकाल तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य किया। वे संविधान सभा के अध्यक्ष बने। उन्होंने कहा कि हमने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है परंतु अभी हम नए कानून बनाएंगे जिससे नए राष्ट्र का शासन चलाया जा सके। स्वाधीनता से पहले जुलाई 1946 में हमारा संविधान बनाने के लिये एक संविधान सभा का गठन किया गया। डॉ राजेन्द्र प्रसाद को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। यह उनकी निस्वार्थ राष्ट्र सेवा के प्रति श्रद्धांजली थी जिसमें वे स्वयं मूर्तरूप थे। डॉ राजेन्द्र प्रसाद का सेवा क्षेत्र इतना विस्तृत था कि उनके हर बिन्दु को इस शोध पत्र में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसलिए शोध पत्र को भारतीय शिक्षा के लिये उनके योगदान पर केंद्रित किया गया है।
डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने महत्व के तीन पत्र लिखे –
1. अग्रज श्री महेंद्र प्रसाद को लिखा पत्र।
2. पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी को लिखा पत्र।
3. पंडित जवाहर लाल नेहरू को लिखा पत्र।

keywords : ----------

हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात केन्द्रीय व राज्य सरकारों की दृष्टि शिक्षा की ओर उन्मुख हुई व उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में बदलाव की धारणा को बल दिया व शिक्षा को एक नई गति व दिशा प्रदान करी। हमारे भारतीय संविधान ने हमारी शासन व्यवस्था, भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सफलता के शिखर पर पहुंचाने की पुरजोर कोशिश करी। परंतु यह सब लिखित बातें ही बन कर रह गई। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में दर्शन की आवश्यकता पर बल दिया गया है जिससे आने वाली पीढ़ी शिक्षा को उत्कृष्ट शिखर पर पहुंचाने के लिये शिक्षा के कार्य, उसके अर्थ को विभिन्न विचारक, दार्शनिक आदि के अनुसार वर्तमान संदर्भ में ढालें।

ऐसे ही एक महान विभूति का जन्म हमारे देश में हुआ जिनका नाम था डॉ राजेन्द्र प्रसाद। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद के विषय में लिखते समय सर्वप्रथम उनके लिये 21 अप्रैल 1958 में केरल विधानसभा में नेहरू जी द्वारा कहे गये यह शब्द ही उनके विषय में अधिक से अधिक अभिव्यक्तियाँ बयां करते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा था –

राजेन्द्र बाबू न केवल हमारे देश के सबसे बड़े पद पर आसीन हैं, बल्कि उससे कुछ ज्यादा हैं। शायद किसी भी दूसरे व्यक्ति से अधिक उन्होंने आज के उस राष्ट्रीय आंदोलन को अपने जीवन में उतारा है। जिससे हम गुजरे हमारे महान राष्ट्रीय आंदोलन के कई रूप रहे हैं और उसके साथ अनेक प्रकार के उसके नेता रहे हैं।

डॉ राजेन्द्र प्रसाद बुनियादी भारतीय परंपरा का, खास तौर से, ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करते थे। यद्यपि वे कोई मामूली किसान नहीं थे। वह अत्यंत प्रतिभाशाली, महान शिक्षा शास्त्री व सुयोग्य वकील थे। ऐसे महान शिक्षाविद डॉ राजेन्द्र प्रसाद का मानना था कि अभी–अभी स्वतंत्र हुए हमारे देश को विकास की पटरी पर लाने के लिये सर्वप्रथम शैक्षणिक ढांचे में आमूल–चूल परिवर्तन आवश्यक हैं। इस परिवर्तन के लिये वे सदैव ही प्रयासरत रहे कि भारत का शैक्षणिक ढांचा भारत की परिस्थितियों के हिसाब से निर्मित किया जाए, न कि विदेशियों द्वारा लाया गया कोई भी शैक्षणिक कार्यक्रम भारत में लागू हो। वे भारत की ग्रामीण व शहरी परिस्थितियों से पूर्णतः वाकिफ थे। इसलिए वे भारत में ऐसे शैक्षणिक ढांचे का निर्माण करना चाहते थे जिसमें भारत अपना सम्पूर्ण अन्तः करण तक विकास कर सके। इसके लिये आवश्यक था कि भारत में शैक्षणिक ढांचे का निर्माण भारतीय शिक्षाविदों के द्वारा ही किया जाए। जिसको भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा साकार रूप दिया जा सके। डॉ राजेन्द्र प्रसाद का मानना था कि देश में प्रजातन्त्र को सफल बनाने के लिये आवश्यक योग्यताओं वाले अनेक नर–नारियों की जरूरत है। ऐसी योग्यता रखने वाले नागरिकों के द्वारा ही हमारे प्रजातन्त्र को मजबूती प्रदान की जा सकती है या इस प्रकार उसे कहें तो प्रजातन्त्र की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता भी शिक्षित व जागरूक जनता है, क्योंकि जनता जब तक लोकतंत्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को नहीं समझेगी, तब तक लोकतंत्र मजबूत नहीं हो सकता।

1. समस्या कथन (शोध शीर्षक) :
डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक कार्यों की उपादेयता।

2. शोध के उद्देश्य :
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक कार्यों की उपादेयता का अध्ययन करना।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शिक्षा उद्देश्य का अध्ययन करना।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक कार्यों की उपादेयता वर्तमान प्रासंगिकता के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिए गए मूलभूत सिद्धांतों, विचारों का अध्ययन करना।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षणिक कार्यों, शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।

3. शोध विधि :
किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिये शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य अपनी समस्या का हल ढूँढना है। इस शोध प्रबंधन में ऐतिहासिक व वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

4. शोध क्षेत्र :
डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षिक दर्शन व चिंतन का विस्तृत अध्ययन

❖ **<u>शोध से संबंधित मुख्य निष्कर्ष</u>**

1. शैक्षिक कार्यों की उपादेयता संबंधी निष्कर्ष :
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के विचारों के अनुसार विद्यार्थी सभी कार्य को करने में सक्षम हो। इसके लिये सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों ही शिक्षा दी जाए।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लोक संस्कारित शिक्षा को जोड़ा जाए।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद का शिक्षा दर्शन मानवतावाद एवं यथार्थवाद पर आधारित है।
- जॉन डीवी के अनुसार विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। जहां पर भारतीय दर्शन की विचारिक पृष्ठभूमि समाहित हो वहाँ पर शिक्षा के साथ–साथ संस्कार व संस्कृति भी समाहित होती है। इसी भाव से शिक्षा के अभिनव प्रयोग विद्यालयों में हो।

2. शिक्षा के उद्देश्य संबंधी निष्कर्ष :
- इनके शैक्षिक विचारों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सीमित न होकर असहाय पिछड़े क्षेत्र, जनजाति क्षेत्र एवं दूरदराज के क्षेत्रों के विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास करना है।

- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के शैक्षिक विचारों में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों के आत्मिक एवं स्व–विवेक का विकास कर उनके अंदर के अंधकार को दूर करना एवं प्रकाश में लाना है।

3. व्यक्तित्व संबंधी निष्कर्ष :

- इनका सम्पूर्ण जीवन सादा जीवन उच्च विचार पर आधारित था।
- धैर्य नामक गुण इनमें कूट–कूट कर भरा था जो कि इनके दो बार राष्ट्रपति के कार्यकाल व भारत रत्न जैसे उच्च पद एवं सर्वोच्च पुरस्कार से परिलक्षित होता है।
- इनके व्यक्तित्व के असीम व्यावहारिक गुणों, क्षमताओं एवं मानवीय मूल्यों से युक्त होने के कारण ही इन्हें राजेन्द्र बाबू कहा जाता है।
- इनका व्यक्तित्व अभूतपूर्व संकल्प शक्ति से परिपूर्ण था।

4. मूलभूत शैक्षिक सिद्धांतों संबंधी निष्कर्ष :

- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के शैक्षिक विचारों में समाज व राष्ट्र के विकास व उन्नति पर बल दिया गया जिससे हमारा देश उन्नति के शिखर पर विराजमान हो।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के शिक्षा दर्शन में विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देने की व्यवस्था पर बल दिया गया है जो पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ सद् संस्कारों को जगाने तथा भारतीय जीवन मूल्यों, बौद्धिक ज्ञान व व्यवहार परिवर्तन के लिये महत्वपूर्ण हो सके।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जिससे विद्यार्थियों में चरित्रवान व संस्कारिक गुणों का विकास हो जो कि देश की प्रगति में सहायक हो।

5. शैक्षिक कार्यों की वर्तमान प्रासंगिकता संबंधी निष्कर्ष :

- इनके अनुसार देश की भावी पीढ़ी को बचपन से भारतीय संस्कृति व परंपराओं के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था को ग्रहण व स्थापित करना है।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुसार विश्व के आधुनिक ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीकी उपलब्धियों का पूर्ण उपयोग करते हुए भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षण पद्धति व साधन विकसित करना, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति सुलभ हो सके।
- व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का विकास जो कि प्राचीन भारतीय सभ्यता–संस्कृत से परिपूर्ण हो व बालक को स्वावलंबी बना सके।

6. डॉ राजेन्द्र प्रसाद के शैक्षणिक अर्थों व शिक्षण विधि संबंधी निष्कर्ष :

- वैज्ञानिक, प्रयोगात्मक व प्रयोजनात्मक विधि का प्रयोग करना जिससे विद्यार्थी खोजी प्रवृत्ति का बन सके।
- तार्किक क्षमता विकसित करना व प्रश्न पूछने की क्षमता का विकास करना।
- शिक्षा की भाषा मातृभाषा में होनी चाहिए।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

❖ **शोध के शैक्षिक निहितार्थ :**

- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी का मानना था कि हमारी शिक्षण संस्थाओं का यह कर्तव्य है कि नागरिकों को उन कार्यों के योग्य बनाए जो उनके सामने आने वाले हैं।
- भारतीय लोकतंत्र के विकास के लिये डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने देश के प्रत्येक नागरिक विशेषकर युवा वर्ग के लिये एवं भारत की शैक्षणिक संस्थाओं के लिये एक नैतिक नियमावली तैयार की जो कि हमें उनके भाषणों व लेखों के अध्ययन करने के बाद स्वतः ही आत्ममंथन की ओर ले जाती है। इस नियमावली के अभाव में हमारा लोकतंत्र आजादी के इतने वर्षों बाद भी वह मजबूती व विकास प्राप्त नहीं कर सका है, जिसकी कल्पना डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने की थी। डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुसार प्राइमरी पाठशाला में पढ़ाने वाले व्यक्ति की परिकल्पना इतनी विस्तृत कैसे रही कि वो आज की आधुनिक परिकल्पनाओं पर भारी है। इसके उत्तर में डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा कि वह परिकल्पना देशभक्ति व समर्पण से परिपूर्ण थी इसलिए राजेन्द्र प्रसाद जी के द्वारा रेखांकित मार्ग पर चलकर ही विश्वविद्यालय अपनी स्थिति सुधार सकते हैं।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने चिंतन व लेखन में शिक्षा को जिस विस्तृत तरीके से प्रस्तुत किया है, यह विस्तार साधारणतः हर जगह देखने को नहीं मिलता। उनकी शिक्षा के हर क्षेत्र पर नजर थी जिसके कारण वे भारत का शैक्षणिक माहौल सुधार कर एक आदर्श व विकसित भारत के निर्माण के स्वप्न देख रहे थे। उन्होनें शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र जैसे – ग्रामीण शिक्षा, विश्वविद्यालयी शिक्षा, नारी शिक्षा, आदिवासी शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा आदि अनेक पहलुओं पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी का शिक्षा दर्शन वर्तमान युग में संस्कृति मूल्यों का परिचायक है।
- प्रस्तुत शोध शिक्षा क्षेत्र में व्यक्तिगत, सामाजिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक समस्याओं को दूर करने में कारगर सिद्ध होगा।
- प्रस्तुत शोध मानवीय मूल्यों, संस्कृति, संस्कारवान, देशभक्त, राष्ट्रभक्त बनने में सहायक सिद्ध होगा।
- ज्ञान ही मानव की अपार शक्ति है। इसलिए विद्यार्थियों में अध्ययन की ओर प्रस्तुत शोध बल देता है।
- प्रस्तुत शोध में खादी का अर्थशास्त्र में आर्थिक चिंतन की ओर बल दिया गया है।
- वर्तमान भारतीय शिक्षा की चुनौतियों, समस्याओं, कठिनाइयों व शैक्षिक शोध की दृष्टि से उपयोगिता व सार्थकता रखता है।
- भारतीय संस्कृति की विविधता पर उन्होनें कहा कि – कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. प्रसाद, राजेन्द्र (1947), आत्मकथा, साहित्य संसार–पटना
[2]. प्रसाद, राजेन्द्र (1952), साहित्य, शिक्षा और संस्कृति, आत्माराम एण्ड संस,
[3]. प्रसाद, राजेन्द्र (1953), भारतीय शिक्षा, आत्माराम एण्ड संस
[4]. जयकर, एम.आर (1958), द स्टोरी ऑफ माइ लाइफ भाग–1, पृष्ठ 372
काली किंकर (2010), आधुनिक भारत के निर्माता– डॉ राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन विभाग – भारत सरकार, पृष्ठ 329
काली किंकर (2010), आधुनिक भारत के निर्माता– डॉ राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन विभाग – भारत सरकार, पृष्ठ 312
[7]. प्रसाद, राजेन्द्र (2018), संस्कृत और संस्कृति, प्रभात प्रकाशन

----------00--------